रामराज्य

स्वामी श्रीमद् रामहर्षणदासजी महाराज

NOT FOR SALE

All rights reserved

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

पुस्तक प्राप्ति स्थान

श्री रामहर्षण सेवा संस्थान
परिक्रमा मार्ग नया घाट
अयोध्या(उ.प्र.) - मो. 7800126630

Important Notice -

This e-book is being provided free of cost by Shri Ram Harshan Seva Sansthan, Ayodhya for read only.

आवश्यक सूचना -

यह ई-पुस्तक श्री राम हर्षण सेवा संस्थान, अयोध्या द्वारा केवल पढ़ने के लिए इंटरनेट पर नि:शुल्क उपलब्ध करायी जा रही है।

राम राज्य

अनन्त श्री विभूषित पंचरसाचार्य
स्वामी श्रीमद् रामहर्षणदास जी महाराज

श्री हर्षण साहित्य प्रकाशन
परिक्रमा मार्ग, नयाघाट, अयोध्या

राम राज्य
श्री हर्षण साहित्य प्रकाशन
परिक्रमा मार्ग, नयाघाट, अयोध्या–224 123 (उ.प्र.)

सर्वाधिकार सुरक्षित

द्वितीय आवृत्ति 2000

न्यौछावर रु. 8.00 मात्र

मुद्रक :
अनुज प्रिन्टर्स
98, जे. एन. रोड,
लखनऊ फोन : 267224

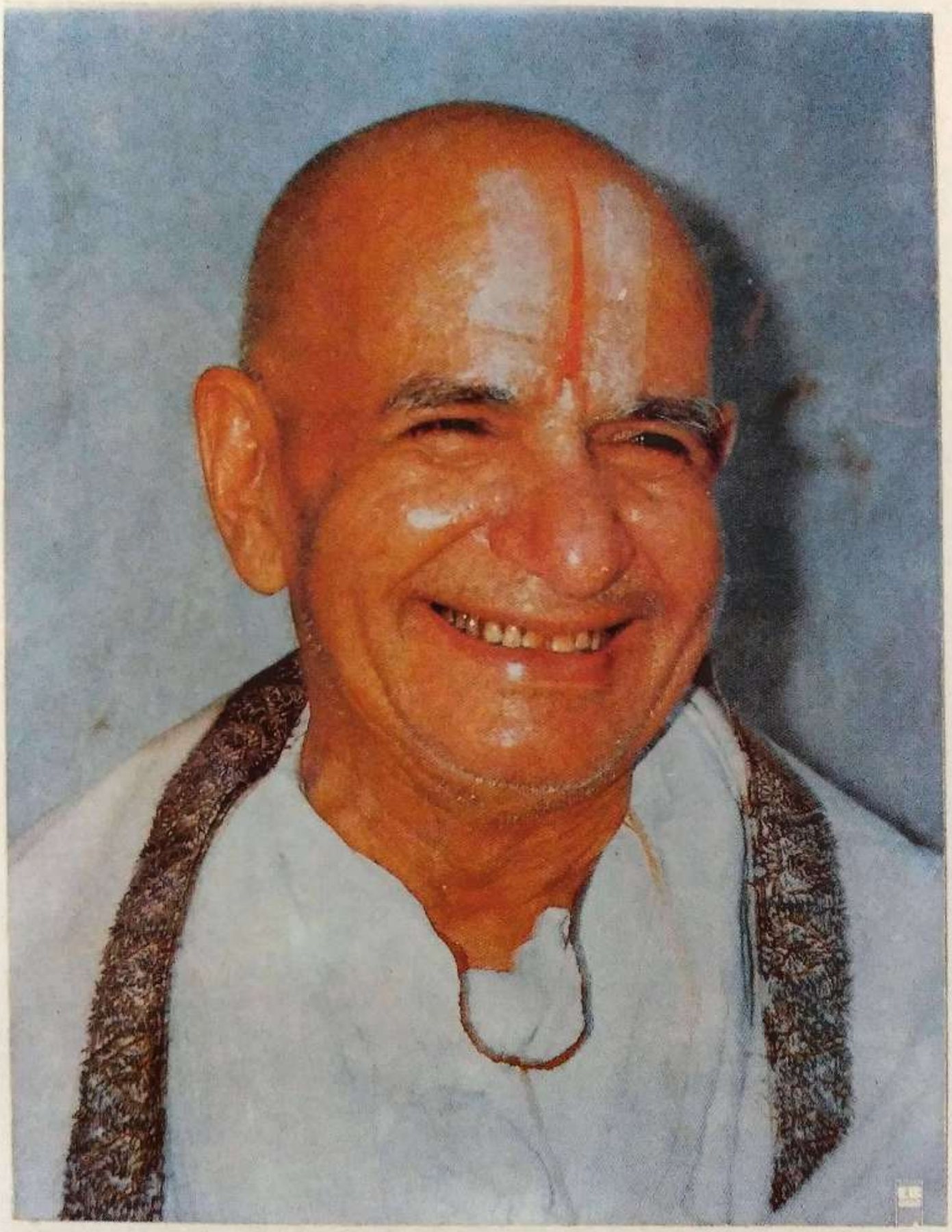

श्री सीतारामाभ्यां नमः

प्रथम दृश्य

(आज पुञ्जीभूत प्रकाश के दिव्य सिंहासन में दिव्य त्रेता नामक महाराज अपनी चतुर्थ अवस्था की देह कान्ति से युक्त संप्रतिष्ठित हैं। सचिवों और उपसचिवों से समावृत तथा दासी दासों से सेव्यमान महाराज की प्रवृत्ति स्वराष्ट्र संचालन में अभिभूत है। निरंकुश शासक के किये हुए प्रतिक्षेत्रों के प्रत्येक कार्यों का समर्थन उनके सभी सद्कर्मचारी दे रहे हैं, किन्तु प्रजा वर्ग में अल्पसंख्या के लोगों को कुछ असंतोष तथा बहुसंख्यकों को सन्तोष है उक्त महाराज के राज्य में)

(प्रहरी का प्रवेश)

प्रणाम करता हुआ. . . . . .

"महाराज के जीवन की जै जैकार हो।"

"चिरञ्जीवी हो। कहो द्वारप ! अकस्मात् आने का क्या कारण है असमय में ? मुख मुद्रा आश्चर्य दर्शी

व्यक्ति जैसी प्रतीत हो रही है तुम्हारी।"

" महाराज ! द्वार में एक परम तेजस्वी महापुरुष खड़े हैं, आँखें सीधे उनकी ओर देखने में सक्षम नहीं होतीं, वे कोई स्वतन्त्र चक्रवर्ती महासम्राट जैसे सर्वलक्षणान्वित प्रतिभा सम्पन्न हैं, आपसे मिलने के लिए आपके अनुशासन की प्रतीक्षा में हैं वे, कहिये क्या आज्ञा है ?"

" हाँ, हाँ, अवश्य अविलम्ब सादर उन्हें यहाँ ले आने में विलम्ब का आलम्बन मत करो, सहर्ष मेरी आज्ञा है।"

(तेजस्वी महापुरुष का प्रवेश तथा त्रेता महाराज का उठकर सप्रेम मिलकर, उन्हें अपने आसन में बैठाना तथा पाद्यादि से सत्कार कर परस्पर प्रेम दृष्ट्या दर्शन करते हुए अतृप्त से सभा के लोगों के नेत्रों का विषय बनना।)

"आज्ञा करें, महाराज श्री का असमय में दर्शन देना किसी हेतु को लेकर हुआ है, या केवल आपकी अकारण कृपा से मेरे सौभाग्य की समृद्धि ही आप श्री को यहाँ लाने में हेतु बनी है।" त्रेता महाराज ने कहा।

"मेरे प्रिय महाराज श्री ! आपके दर्शन का हेतु अवश्य ही एक अवर्णनीय कारण आ पड़ा है, जिससे

मुझे आपके समीप अकाल में अकस्मात् आने के लिए बाध्य होना पड़ा। आपका मंगल हो, मंगल हो।" परम तेजस्वी महाराज सत्य ने कहा।

"वह महनीय और अकाट्य कारण कौन सा है, महाराज ! जिससे आप श्री को मुझे दर्शन देने के लिए बाध्य होकर कृपा करनी पड़ी।" विनयावनत महाराज त्रेता ने कहा।

"महाराज ! संप्रति मुझे आपश्री के शेष जीवन में ग्यारह हजार वर्ष आपके शरीर में अन्तर्भुक रहकर स्वतन्त्र शासन करना है समस्त भुवनों पर, यह अनन्त ब्रह्माण्डनायक सर्व समर्थ काल को भी कवलित करने वाले दाशरथि राम रघुनन्दन का अपरिहार्य अनुशासन है। वर्तमान में सरयू तट संस्थिता सर्वालंकारालंकता परम पुनीत आद्यापुरी श्रीअयोध्या के राज सिंहासन में आसीन त्रिलोकी को आनन्द प्रदान करने वाले रघुकुल शिरोमणि राजा रामचन्द्र की इच्छा के विरुद्ध, पंचभूत आदि प्रकृति समुदाय तथा समस्त सुर–नर–नागों सहित ब्रह्मादि देवता एंव काल भी किञ्चित चेष्टा नहीं कर सकते, किं पुनः हम लोगों की वार्ता ! जगत के आदि कारण परब्रह्म परमात्मा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम

के भृकुटि विलास से ही जगत के सृजन, संरक्षण और संहार की लीला उनके चिद्विलास के लिए बिना विराम और बिना किसी की सहायता के ही चलती रहती है। अस्तु, हम लोग उनकी इच्छा का अनुवर्तन कर उनका कैंकर्य लाभ प्राप्त कर अपने को कृतकृत्य समझें, धन्य–धन्य के पात्र बनें, परम सौभाग्य का सुख सम्भोग करें।'' सत्य नामक महाराज ने कहा।

'' महाराज ! पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम जी की इच्छा के प्रतिकूल चलने से अपना अस्तित्व ही अस्त हो जायेगा, अस्तु, उनकी अनुकम्पा से साम्प्रत संप्राप्त उनके कैंकर्य लाभ से लाभान्वित होना परम पुरुषार्थ समझना चाहिए हम दोनों को। इसलिए आप मेरे अन्तः प्रविष्ट होकर अपने सत्ययुग के अनुसार प्राणि समुदाय की जीवन पद्धति का विस्तार और प्रचार–प्रसार करें। मैं अपनी आत्मा में स्थित होकर तब तक अक्रिय रहूँगा, जब तक श्रीराम जी महाराज की धराधामीय लीला का संवरण न होगा।''

इति प्रथम प्रकाशः

(त्रेता महाराज के अन्तर्भुक होकर महाराज सत्य, सूर्य संकाश स्वर्ण सिंहासन में शोभा सम्पन्न संप्रतिष्ठित

हैं, उनके सचिव और सहकारी कर्मचारी गण सत्य की प्रतिमूर्ति के समान ही अपने–अपने भासान्वित आसनों में विराजे हुए महाराज के मन में मन और उनकी इच्छा में स्वेच्छा को मिलाकर सभा को आनन्दमय, मंगलमय और तेजोमय बना रहे हैं। सत्य महाराज, धर्म की ओर संकेत कर दृष्टिपात कर रहे हैं – तदनन्तर धर्म उठकर महाराज की ओर मुख कर करबद्ध कुछ कहने को समुत्सुक हैं।)

"महाराज ! सत्ययुगीय आचरणों से संयुक्त जड़ चेतनात्मक जगत ऐहिक और पारलौकिक आनन्द के सिन्धु में सदा निमग्न रहे, दुख की संज्ञा अपने कारण में विलीन होकर श्रीराम राज्य में नाम न ले, यह साकेताधीश राजा रामचन्द्र जी महाराज की इच्छा है, उनकी इच्छा के प्रतिकूल चलने वाला कोई आज तक देखा और सुना नहीं गया। अतः उन धर्म विग्रहवान श्रीराम जी की सेवा सुचारु रूप से करने के लिए मैं अपने इन चारों चरणों (सत्य, दया, दान, तप) से सम्पूर्णतः सजगतया अहर्निशि ग्यारह हजार वर्ष तक संलग्न रहूँगा, जिससे धर्म के श्वेत वस्त्र पर कालिमा की एक छोटी सी बिन्दु नहीं आयेगी, किं पुनः आपका

संकेत और शक्ति प्राप्त कर, अस्तु, आप अपनी आज्ञा का अनुवर्तन सर्वभावेन हुआ समझें।"

इति द्वितीय प्रकाशः

(अधर्म की ओर संकेत कर)

"क्यों क्यों ? पापबुद्धे अधर्म ! कम्पित वदन भयाक्रान्त क्यों हो रहे हो ?" महाराज सत्ययुग ने कहा।

(दूर से सत्य का तेज न सहता हुआ छिपकर)

"महाराज ! आत्मविनाश की शंका से भयभीत एवं व्याकुल वदन हूँ, गिड़गिड़ाकर आप श्री के चरण प्रान्त में पड़ा जीवन दान चाहता हूँ। पूर्णतम परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान के राज्य में कहीं किञ्चित दृष्टिगोचर हुआ नहीं कि जीवन समाप्त। अतः आपकी शरण हूँ, शरण हूँ, पाहिमाम्, पाहिमाम्।" अधर्म ने कहा।

"उठो, उठो, तुम्हारा उपयोग कलि में भरपूर होगा, चिन्ता की चिता में मत जलो। हाँ, यह वार्ता अवश्यमेव अपने हृदय में स्थित कर लो कि राम राज्य में किसी भी जड़ चैतन्य प्राणी का स्वप्न में भी स्पर्श न करना, अन्यथा घोर दण्ड के पात्र बनकर स्वयं विनष्ट हो

जाओगे।" महाराज सत्य ने कहा।

"जै हो महाराज की ! मुझे जीवन दान मिला। किन्तु इस समय अपना आवास कहाँ करूँ ? कृपया आपश्री के आदेश पाने की कामना करता हूँ।"

(अधर्म की करुणा भरी प्रार्थना सुनकर)

पापमूर्ते ! तुम वर्तमान समय ग्रन्थों में जहाँ पापों की व्याख्या की गई है वहाँ लिखे हुए अक्षरों में सूक्ष्म रूप से वास करो, तथा दूसरा स्थान नरकों के गर्त में हैं, उन्हीं में यमानुशासन में रहकर अप्रकट रूप से अपना वास स्थान बनाओ। इसके अतिरिक्त अन्य का स्पर्श न करना, अन्यथा अनन्त ब्रह्माण्ड नायक श्रीमन्महाराज रामचन्द्र जी के मात्र भृकुटि संचालन से भस्मीभूत हो जाओगे।" महाराज सत्य युग ने कहा।

"महाराज की जय हो। आपकी आज्ञा का अक्षरशः पालन करने में आलस्य व प्रमाद को स्थान न दूँगा।" कहकर पापमूर्ति अधर्म अदृश्य हो गया।

(देवता लोग जय घोष के साथ पुष्पवृष्टि करने लगे।)

इति तृतीय प्रकाशः

(संकेत से)

"जगत को ग्रास बनाने वाले काल देव ! रामराज्य की ग्यारह हजार वर्ष की अवधि पर्यन्त आप के आचारों व विचारों को मैं श्रवण करना चाहता हूँ, आपको यदि कोई कष्ट न हो", सत्य महाराज ने प्रश्न किया।

"महाराज सत्य ! जहाँ आपका अनुशासन है, व मुझ काल के काल अर्थात् काल, कर्म, स्वभाव, गुणभक्षक दाशरथि राम साकेत पीठ में प्रतिष्ठित होकर राज्य लीला कर रहे हों, वहाँ श्रीराम जी की इच्छा के विपरीत करने में मेरी सर्वसामर्थ्य पंगु ही रहेगी।

मैं वचन देता हूँ कि श्रीराम के राज्यकाल में अल्पमृत्यु व तत्सम्बन्धी किसी प्रकार की पीड़ा व व्याधि चराचर जीवों को नहीं होगी। सभी प्राणि समुदाय विरुज रहकर उभय विभूति के सुख से सम्पन्न रहेंगे। श्रीराम राज्य में स्त्रियाँ सदा सधवा रहकर पतिव्रत धर्म के शिखर पर स्थित रहेंगी, पिता के सामने पुत्र की मृत्यु नहीं होगी। हिंसक जीव किसी की भी हिंसा न कर परस्पर विरोधी वर्ग के पशुओं के साथ भी मैत्रीभाव रख कर एक घाट जल पान करेंगे। श्रीराम राज्य में इच्छा

मृत्यु से ही जीव शरीर से उत्क्रमण करेंगे, मुझ काल की कलना नहीं चलेगी, कोई प्राणी भय से युक्त नहीं रहेगा, "सर्वेजनाः अभयं विचरिष्यन्ति" अकाल में भी आवश्यकतानुसार वृक्ष–समूह फूलों–फलों से अवनत शाखा का दर्शन कराते हुए जनता जनार्दन की सेवा करने को समुत्सुक बने रहेंगे। असमय में भी किसी वस्तु का अभाव न होगा ग्यारह हजार वर्ष तक।" काल ने कहा।

इति चतुर्थ प्रकाशः

(पञ्च भूतों की ओर संकेत कर)

"कहिये, आप लोगों का मन्तव्य क्या है? राम–राज्य की सेवाविधि विषयक वार्ता में।"

"महाराज ! सत्य काल में जो होता है वह सब सत् ही होता है असत् नहीं, किं पुनः जगत के कारण जगन्नियन्ता दशरथ नन्दन राम के राज्य में।" सभी ने एक स्वर से कहा।

"हम सदा निर्मल रहकर सबको अवकाश दिये रहेंगे। चारों भूत हममें ही स्थित रहकर रामराज्य में श्रीराम जी की इच्छानुसार उन्हीं की शक्ति व प्रेरणा से

अपनी–अपनी सेवा में जागरूक रहेंगे।" आकाश ने कहा।

"हम आकाश में स्थित रहकर राम राज्य में सदा शीतल मन्द और सुगन्धमय बहकर सभी प्राणि समूह को सुखावह सिद्ध होंगे। हमारे बहने से किसी वृक्ष की डाली व फल–फूलों का पतन न होगा। झँकोरे के साथ प्रखरता हमारे अन्तर्भुक रहकर किसी को कष्टप्रदायिका न बनेगी। जीवों की अभिरुचि पर ध्यान सदा रखना हमारे अन्तःकरण का निश्चय है महाराज ! प्राण, अपान, व्यान, समान और उदान ये सम रहकर प्राणियों को सदा निरामय बनाये रहेंगे। बहुत क्या कहें ? श्रीराम जी की इच्छा के प्रतिकूल नाम मात्र अपनी चेष्टा का प्रदर्शन न करेंगे।" वायुदेव ने कहा।

"अहो ! राम राज्य में किसकी ऐसी स्वतन्त्र शक्ति है जो परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान की इच्छा के प्रतिकूल नाममात्र आचरण कर सके। हम और वायुदेव भुक्तभोगी हैं, वेदविदित यक्ष के दिये हुए तृण के तिनके को यावत् अपनी शक्ति का प्रयोग करके भी तृण को न वायु उड़ा सके और न हम, अग्नि उसे जला सके, अन्ततः हतप्रभ होकर इन्द्रसभा लौट आये थे। इसलिए राम राज्य में

अग्नि भय किसी को न होगा तथा गृह–गृह में गार्ह्यपत्याग्नि कभी भी शान्त न होगी, हवनादि कृत्यों में प्रसन्नतापूर्वक सुन्दर शुभ स्वरूप अग्नि जलकर हविष्यान्न ग्रहण करेगी। श्रीराम जी की इच्छा का अनुवर्तन करने में हमसे कोई प्रमाद व आलस्य न होगा महाराज !" अग्निदेव ने कहा।

"महाराज ! पानी से किसी को भय न रहेगा राम–राज्य में। किसकी शक्ति है कि महात्मा श्री दाशरथि राम रघुनन्दन की इच्छा के प्रतिकूल मन में भी विचार कर ले। स्वास्थ्यवर्धक मीठे जल के अतिरिक्त जल न रहेगा रामराज्य में। नदियाँ दोनों किनारों से भरपूर रहेंगी, कूप, वापी , तालाब सब जल से प्रपूर्णित रहेंगे, जल की सतह पृथ्वी में कम गहराई से ही प्राप्त होगी, जिससे जलाशयों के निर्माण में विशेष परिश्रम से लोग अछूते रहेंगे। अन्न व प्राणों के पोषण का कार्य करने में असावधानी न होगी। अन्यथा जगत् के कारण स्वतन्त्र स्वराट निरंकुश शासक राम का अपराध करके अपना विनाश ही देखना पड़ेगा।" जलदेव ने कहा।

"मैं सदा स्थिर रहकर भूचाल जनित पीड़ा से राम–राज्य में किसी को पीड़ित न होने दूँगी, अन्न,

औषधियाँ, रस, हीरा आदि रत्न, स्वर्ण, रजत, ताम्र, पीतल, लोहा, पारा, शीशा, गन्धक, गैरिक, कोयला, पत्थर इत्यादि उपयोगी द्रव्यों की खानें भरपूर राम–राज्य में प्रकट कर मैं उनकी सेवा से वञ्चित न रहूँगी। कहाँ तक कहूँ; राजा पृथु ने बड़े साधन से जो जो प्राप्त किया था, वह–वह अपने से ही भुवनेश्वर भगवान सप्तद्वीपवती पृथ्वीपति राजा रामचन्द्र के राज्य में उनके सेवार्थ प्रकट कर दूँगी। सारा भूमण्डल रमणीयता का रूप बनकर राम को रमाने में समर्थ हो जायेगा, साथ ही सम्पूर्णतया पृथ्वी के पति सर्वभावेन कहलाने योग्य दाशरथि राम ही हैं, इसलिए ग्यारह हजार वर्ष तक सारी भूमि भूमिजा पति के ही अधिकार में रहेगी।'' पृथ्वी ने कहा।

इस प्रकार पाँचों भूतों ने राम–राज्य की सेवा के लिए सत्ययुग महाराज से प्रतिज्ञापूर्वक वचन दिये।

इति पञ्चम प्रकाशः

(सत्ययुग के संकेत करने पर)

''महाराज ! हम सब षट् सम्पत्तियाँ (शम, दम, दया, तितीक्षा, क्षम और शान्ति) कल्याण गुण–गणों के साथ

श्री रघुराज प्राणि पुण्यावतार श्री राम जी के राज्य में जन–जन के अन्तःकरण में निवास करेंगी, जिससे सम्पूर्ण प्रजा आनन्द की अनुभूति में ही जीवन पर्यन्त कालक्षेप करेगी। तप और तेज ही उच्चतम वृद्धि से अभिभूत धरा धाम की समता स्वर्ग करने में अक्षम रहेगा। साथ ही स्वर्ग संस्थित सुर समुदाय श्रीरामराज्य के सुखमय संयमित जीवन को देखकर स्पर्धा करने लगेगा। भोग–विलासों से अतृप्त उनका जीवन अपने को कोसता हुआ रामराज्य में मनुष्य बनकर ही नहीं अपितु निर्वैर पशु जीवन पाने की कामना से संयुक्त हो जायेगा। आध्यात्मिक स्तरों के सोपान क्रमशः परम पद में आरोहण कराने के लिए जन–जन के हृदय की भूमि में निर्मित होकर रामराज्य की मौलिकता और अलौकिकता स्थापन करेंगे।"

इति षष्टम् प्रकाशः

"हमारा तापमान रामराज्य के चराचर प्राणियों की आवश्यकतानुसार कम व अधिक होता रहेगा, जिससे गर्मी, वर्षा और सर्दी सुखावह होंगे। सम्पूर्ण प्राणियों को प्राणशक्ति देते रहना तथा उनके प्राणों से अपनी रश्मियों को नित्य जोड़े रहकर अन्त में उन्हें अर्चिरादि

मार्ग से परमधाम पहुँचाने की सेवा सर्वभावेन रामराज्य में होती रहेगी। सजगता के साथ प्रकाश आदि देना अपना सहज स्वरूप है ही, जन्मांग चक्र के अनुसार किसी के प्रतिकूल स्थान में होने पर भी हमसे किसी को भय न होगा रामराज्य में।" सूर्यदेव ने कहा।

(महाराज सत्ययुग के संकेत करने पर)

"सदा सुशीतल सुधापूर्ण सुखद किरणों से हम जन–जन को प्रिय, आह्लाददायक और प्रकाशक सिद्ध होंगे, लोगों के शरद ताप के विनाशक बने रहेंगे और अपनी अमृतमय शक्ति से औषधियों तथा प्राणि वर्ग समूहों को पुष्टता प्रदान कर उनका विवर्धन करते रहेंगे। साथ ही जन्मांग चक्र के अनुसार प्रतिकूल स्थान में रहकर किसी प्राणी को दुखद न बनेंगे रामराज्य में।" चन्द्र देव ने कहा।

(महाराज सत्य के संकेत को प्राप्त कर)

"राम–राज्य में किसी प्राणी के प्रतिकूल न रहकर हम सब सर्वभावेन सबके अनुकूल रहेंगे। सुख सम्पत्ति की समृद्धि से सप्तद्वीपवती पृथ्वी में भरपूर रहकर दुख की संज्ञा मिटाने में समर्थ होगी, जन्मांग चक्र के अनुसार

यदि हम लोग किसी के विपरीत स्थान पर भी स्थित हुए तो भी अनुकूल फल ही प्रदान करेंगे, क्योंकि श्री राज राजेश्वर रामजी की इच्छा के विपरीत कार्य करने में कोई सक्षम नहीं है। सभी केन्द्रेश ग्रह श्रीराम जी की शक्ति व प्रेरणा से ही फल देने में समर्थ होते हैं।" भौमादि ग्रहों ने समवेत स्वर में कहा।

इति सप्तम् प्रकाशः

(श्री सत्ययुग के संकेत को समझकर)

"महाराज ! आप श्री का संकेत प्राप्त कर हम धन्यातिधन्यता का मुकुट सिर पर धारण करने योग्य हो गये, क्योंकि परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान राम के राज्य में सेवा करने का सौभाग्य सम्प्राप्त हो गया आपश्री के सौजन्य से, अस्तु, श्रीराम राज्य के ग्यारह हजार वर्ष पर्यन्त कभी भी अनावृष्टि और अतिवृष्टि से प्रजा को भय नहीं उपस्थित होगा, प्रजा की चाह के अनुसार उसकी मुहमागी वृष्टि हुआ करेगी। ओला एवं उल्कापात राम राज्य में न होगा, विद्युत की गड़गड़ाहट भी लोगों को भयकारी सिद्ध न होगी। सप्तद्वीपवती पृथ्वी में सर्वत्र आनन्द ही आनन्द रहेगा, इसमें सन्देह

नहीं।" मेघों ने कहा।

इति अष्टम् प्रकाशः

(सत्य महाराज का संकेत प्राप्त कर)

"महाराज ! कृषि सम्बन्धी अन्न एवं औषधियों को असमय में विनष्टकर प्रजा को संताप पहुँचाने वाले टिड्डी दल आदि कीड़े–मकोड़ों से रामराज्य में किसी समय, किसी प्रकार, किसी को भय न होगा, अस्तु, अन्न से मेदनी सदा भरपूर रहेगी।" कृषि विरोधी वर्ग कीड़ों ने कहा।

इति नवम् प्रकाशः

(महाराज सत्ययुग के संकेत से)

"हम सभी लोकपालों, दिक्पालों और पितरों, गन्धर्वों, किन्नरों, यक्षों के साथ श्री रामराज्य की सेवा में संलग्न रहेंगे, श्रीराम जी की इच्छा के विरुद्ध नाम मात्र आचरण भूमण्डल ही नहीं त्रिलोक में न हो, इसके लिए प्रयत्नशील रहेंगे। यज्ञों में अपना–अपना भाग लेने के लिए धराधाम में देवता लोग साक्षात् पहुँचकर यजमान के सभी मनोरथों को पूर्ण करने में सजग रहकर

श्रीराम जी की सेवा समझेंगे। त्रिलोक में भोग विभूतियाँ यथारुचि सेवा में समुपस्थित रहेंगी। श्री रामराज्य में सभी नर–नारी देवतुल्य शरीर वाले रहकर देव समान भोगों को भोगेंगे इसमें सन्देह नहीं।'' इन्द्रदेव ने कहा।

इति दशम प्रकाशः

(महाराज सत्ययुग की प्रार्थना पर)

''यद्यपि मुझ विधि के विधान के अनुसार त्रेतायुग का चतुर्थ चरण चल रहा है, तथापि अखिल ब्रह्माण्ड नायक जो अपने अंश से अनन्त ब्रह्मा, विष्णु, महेश उत्पन्न कर अनन्त ब्रह्माण्डों का उद्भव, पालन और प्रलय करते हैं, उन साकेताधीश श्रीराम जी की शक्ति व प्रेरणा से, हे सत्ययुत ! आपको त्रेता के अन्तःभुक होकर ग्यारह हजार वर्ष तक धराधाम में प्रथम युगीय वृत्तियों के अनुसार धर्म, कर्म, आयु, भोग आदि रामराज्य में स्थापित कर परम ब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान की सेवा करनी है तो अपका परम सौभाग्य है, मुझे भी बड़ी प्रसन्नता है, अपने बनाये विधान में परिवर्तन होने पर भी उक्त महापुरुष की इच्छा का अनुवर्तन मैं सहर्ष करूँगा, रामाज्ञा की अवहेलना कर किसी को कुशलता

साथ नहीं देती।" ब्रह्मा ने कहा।

इति एकादशः प्रकाशः

(सत्ययुग की प्रार्थना पर)

"हम अपने आराध्य देव के राज्य काल में अपने शंकर नाम को चरितार्थ कर चराचर जगत् के अनुभव का विषय बनाने में उद्यत रहकर श्रीराम सेवा करने के लाभ से वञ्चित न रहेंगे। अस्तु, सभी देवी–देव रामराज्य की प्रजा के अनुकूल रहेंगे, लौकिक और परमार्थिक लाभ प्रजा को सहज ही सर्वभावेन संप्राप्त रहेगा अर्थात् सर्वभुक्तियाँ और सर्वमुक्तियाँ रामराज्य की प्रजा की सेवा करने में अपना सौभाग्य समझेंगी। भूत, प्रेत, पिशाच, वैताल, शाकिनी, डाकिनी आदि से किसी को भय न होगा राम राज्य में। सर्प, बिच्छू आदि दंशक जीव भी किसी को बाधक सिद्ध न होंगे, यह हम वचन देते हैं।" शंकर भगवान ने कहा।

इति द्वादशो प्रकाशः

(महाराज सत्ययुग के संकेत से)

"हमारी सर्वसन्तानें सर्वभावेन सुखावह होंगी रामराज्य में, सभी गायें प्रजा की इच्छानुसार दूध दिया

करेंगी, दूध–घी की नदियाँ बहेंगी, वृषभ मजबूत और हलकर्षण आदि क्रिया करने में कुशल होंगे। सभी के घर में गोशाला रहेगी, गौयें सबसे पूजित रहेंगी, उनके भोजन के लिए खाद्य पदार्थों की बहुतायत रहेगी, पञ्चगव्य से सभी लोग अपने को पवित्र और स्वस्थ बनाये रहेंगे, पञ्चामृत तो धराधाम का अमृत ही होगा जिसका सेवन इच्छानुसार सभी प्रजा करेगी रामराज्य में। गौओं की संख्या अधिकतम होगी जिससे लोग भूरि–भूरि दक्षिणा के साथ शत, सहस्त्र, लक्ष, कोटि, अर्बुद–अर्बुद गायें दान में दिया करेंगे। ऋषियों, मुनियों के पास तो मात्र गोधन ही होगा, उसी से उनके यज्ञादि कार्य चलते रहेंगे।'' इस प्रकार सर्वभावेन रामराज्य में सेवा करने के लिए समुत्सुक कामधेनु ने कहा।

इति त्रयोदशो प्रकाशः

(महाराज सत्ययुग के संकेत से)

''महाराज कौशल नरेश श्री राजा रामचन्द्र के राज्य में हमारे तटवर्ती प्रान्तों को ज्वार–भाटा, तूफान आदि प्रकोपों से किसी को किसी प्रकार की हानि न होगी, जल–यान जल में अस्त न होंगे। मैं स्वयं अनेक रत्नों को स्वतट पर डाल–डाल कर जन–समाज की सेवा,

अपने प्रभु का कैंकर्य समझकर करता रहूँगा। अपने भीतर रहने वाले जन्तुओं से किसी को भय न होगा।" इस प्रकार विनयावनत होकर समुद्र ने कहा।

इति चतुर्दशो प्रकाशः

(महाराज सत्ययुग की मानसिक विनय पर)

"हम त्रिदेवों की शक्तियाँ अपनी–अपनी अन्य आंशिक शक्तियों के साथ अनन्त ब्रह्माण्ड नायक श्रीराम जी के राज्य में श्रीराम जी की इच्छाशक्ति के अनुसार उनका कैंकर्य करने में सदा सजग रहेंगी। सत्य महाराज आप निश्चिन्त रहें, राम राज्य के समान रामराज्य ही होगा। सभी सुर–नर–मुनि महात्मा श्री राम जी के विमल यश का गायन करेंगे, त्रेता का यह चतुर्थ चरण अमल सत्ययुग के आचरण से अंकित होकर विमल यश का भाजन बनेगा। आनन्द ! आनन्द ! आनन्द !" त्रिशक्तियों ने समवेत स्वर में कहा।

इति पञ्चदशो प्रकाशः

(महाराज सत्य की विनय मुद्रा पर,)

हे महाराज सत्ययुग ! श्रीराम राज्य में घर–घर में पञ्चमहायज्ञ, इतिहास पुराणों की कथा, हरिनाम

संकीर्तन, वेदध्वनि, गो–ब्राह्मण और देव पूजा नित्य होने में कोई विघ्नकारी शक्ति उपस्थित नहीं होगी। नित्य उत्सव और मंगलकार्य अनवरत चलते रहेंगे। श्रीराम प्रेम में जगत् के नर–नारी संसार को भूले रहेंगे। आध्यात्मिक उन्नति के अन्तिम सोपान में सभी जन समाज स्थित रहेगा। रामराज्य के आनन्द वैभव को देखकर इन्द्रलोक के देवता ललचीले बने रहेंगे।" सिद्धों ने कहा।

इति षोडशो प्रकाशः

द्वितीय दृश्य

(ब्रह्मलोक में महातेजस्वी, ब्रह्मस्वरूप, चतुरानन ब्रह्माजी परमैश्वर्य सम्पन्न कोटि सूर्य सम प्रभ स्वर्ण सिंहासन में विराजमान हैं। ऋषि, मुनि, महर्षि, देवर्षि, देवगण और सिद्धगण सेवा में समुपस्थित हैं, ब्रह्मलोक के वैभव को तल्लोक प्राप्त पुरुष ही अनुभव करते हैं, अन्य की मति, गति पंगु हो जाती है वहाँ के अलौकिक वैभव के वर्णन करने में, श्रीवीणापाणि सुरर्षि श्री नारद जी महाराज ने अपनी तन्त्री के झनकार एवं श्रीराम नाम संकीतन से ब्रह्मसभा के सभी भाग्यवानों को राम–रस का पेय पान कराकर उन्मत्त सा कर दिया है, आनन्द! आनन्द ! आनन्द !)

संकीतन की समाप्ति वेला के अनन्तर,

"वत्स ! आपको धन्यवाद, धन्यवाद बार–बार देकर भी हम उसे देने से अतृप्त ही रहते हैं, क्योंकि शारंगधारी भगवान राम के परम पावन नाम का संकीर्तन वीणा के तारों को झंकरित कर करके बड़ी मादकता के साथ किया करते हैं, जिससे इस आतुर जगत् को शांति सुख का समनुभव होता है, अस्तु, पुरुषोत्तम भगवान के नाम, रूप, लीला, धाम में सबका मन सहज ही रमने लगता

है। धन्य है आपकी राम–प्रेम प्रगाढ़ता को तथा लोक हितैक ईषणा को। सम्प्रति आप कहाँ से आ रहे हैं ? आपका मन परम प्रसन्न है जैसे उसे उसकी अभीष्ट वस्तु संप्राप्त हो गई हो।''ब्रह्माजी ने कहा

''हे जगत गुरो ! यह आपका नारद अभी श्रीधराधाम अयोध्या से आ रहा है, वहाँ परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान का दर्शन स्पर्शन प्राप्त कर जब जड़ात्मक भूरुह, पाषाण आदि चैतन्य से प्रतीत होने लगते हैं तब चैतन्य जगत् आनन्द विभोर बन जाए, तो इसमें आश्चर्य क्या है। अहह ! राम के समान राम ही हैं। धराधन्य हो गई उनके पादस्पर्श से, तभी तो सभी दिव्य लोकों की स्पर्धा का विषय बनी हुई है वह। सप्तद्वीपवती पृथ्वी में मात्र आनन्द–आनन्द–आनन्द है। आप श्री स्वयं जब तब अयोध्या दर्शन के लिए यदा–कदा जाते ही हैं, आप से क्या छिपा है, न भी जाएँ तो भी आप अन्तर्यामी सबके विधाता सर्वभावेन सबका ज्ञान रखते ही हैं।'' नतमस्तक श्री नारद जी ने कहा।

''अहो वत्स ! श्री रामचरित्र सुनने से मेरे श्रवण तृप्ति की अनुभूति नहीं कर पाते, अस्तु, श्रवणातुर श्रवणों को श्रीराम चरित्र सुनाकर संतृप्त करो, ये तुम्हारा बड़ा

उपकार मानेंगे। हाँ, हाँ, रघुकुल नायक का उदात्त परमोदार चरित्र श्रवण करने के लिए एक मैं ही आतुर नहीं हूँ, ये सब सभा के ऋषि, मुनि, सिद्ध, देव सभी के कर्ण अकुला रहे हैं राम चरित्र श्रवण करने के लिए।"

(सब सभा के लोग समवेत स्वर से . . .)

"रामकथा श्रवण कराने में अब विलम्ब न करें, देवर्षे।"

"आप सबकी आज्ञा शिरोधार्य है नारद को।"

(श्री राम जी को मनसा प्रणाम करके)

"श्रुति का श्रवण किया हुआ एवं मनन निदिध्यासन किया हुआ 'रसो वैसः' ब्रह्म जो ज्ञान और ध्यान की आँखों से आप जैसे महात्माओं के द्वारा अनुभव का विषय बनता है, वह उभयात्मक (निर्गुण, सगुण लक्षणों से एक साथ रहने वाला) परब्रह्म परमात्मा नेत्रों का विषय बनकर चराचर धराधाम के प्राणियों को अपने में रमाकर सबके प्राणों का प्राण बन रहा है। अहो ! वेद प्रतिपाद्य आनन्दमयी अयोध्या के अधिपति आनन्दमय राम को अनेकशः नमस्कार है, उन उत्तम श्लोक, आर्य–लक्षण शीलादि सम्पन्न, उपशिक्षितात्मा, साधुवाद निकष्ण,

उपासितलोक ब्रह्मण्य देव, महापुरुष, महाराज भगवान राम को पुनः पुनः नमस्कार करता हूँ। ब्रह्म में निर्विशेष, सविशेष, निर्गुण, सगुण और निराकार–साकार एक साथ है, श्रुति का समवेत कथन है, अतः वेद वाक्यों को प्रमाण मानकर विश्वासवान पुरुष साधना में अग्रसर होते हैं, किन्तु धराधाम में प्रतिष्ठित महाराज में अनन्त दिव्य कल्याण गुण–गणों एवं निर्विशेषत्व निर्गुणत्व का दर्शन, उनका व्यवहार, दशा और स्वरूप स्थिति में (ध्यान दशा में) प्रत्यक्ष सबको होता है। उनका हेयगुण राहित्य और श्रेयगुण साहित्य, बड़े–बड़े ऋषियों, मुनियों, सिद्धों और वेदमार्ग प्रतिष्ठापनाचार्यों को आश्चर्य चकित करने में सर्वथा समर्थ हो रहा है। श्री मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम का चरित्र वेदोपवृंहण अर्थात् वेदों का यथार्थ भाष्य है। उनके चरित्र से ही वेद का यथार्थ रहस्यात्मक अर्थ वेदानुगामियों को अपनी बुद्धि का विषय बनाना सम्भव है। अधिक क्या कहें ? रामचरित्र सूर्य के समान आत्मालोक एवं चन्द्र के समान आत्माह्लाद प्रदान करने वाला स्वयं सिद्ध है, मुझसे अधिक रामचरित्र के विषय में आप स्वयं जानते हैं, किन्तु नारद से ही सुनकर रामकथा का आस्वाद लेना चाहते हैं, कहिये आगे क्या कहें।

"वत्स ! रामराज्य में काल, कर्म, स्वभाव और गुण के अनुसार ही प्रजा धर्म–कर्म का पालन करती हुई सुख–दुख का अनुभव कर रही है या कुछ वैलक्षण्य है? यथार्थतः निरूपण करके रामचरित्र का चित्रण करो, श्रीराम कथा श्रवण करने के लिए मेरे श्रवण अतृप्त ही बने रहते हैं, अस्तु, इन्हें कथा–सुधा का पेय पिलाकर इनकी तृषा को शान्त करो।" ब्रह्मदेव ने कहा।

"हे जगद्गुरो ! आप श्री रामराज्य की अनुपम अमृतमयी स्थिति को श्रवण करें।

प्रभो ! अमृत से नित्य सींची हुई जड़ी अमृत मूलिका ही होती है, तदनुसार आनन्दमय परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान की पाली–पोषी प्रजा सदा आनन्दमय ही बनी रहती है, वर्तमान समय में सप्तद्वीपवती पृथ्वी के भाग्य का सूर्य प्रचण्डतया देदीप्यमान हो रहा है, धरणि–मण्डन श्रीराम के पाद–स्पर्श से उसके भाग्य की समता यह ब्रह्मलोक भी नहीं कर सकता तो अपर लोकों की क्या कथा !

धर्म विग्रहवान श्रीराम जी के राज्य में सभी नर–नारी धर्म मूर्ति ही प्रतीत हो रहे हैं, मनुष्य ही नहीं पशुओं–पक्षियों और जड़ जगत में भी धर्म का पूर्णरूप

से दर्शन होता है। धर्म अपने चारों चरणों से निर्विघ्न सबसे संपूजित हो रहा है, वर्ण और आश्रम के अनुसार अपने अपने कर्म और धर्म के द्वारा परब्रह्म परमात्मा की अभ्यर्चना सभी नर–नारी सादर सप्रेम, प्रमाद और आलस्य का परित्याग कर, कर रहे हैं। रामराज्य में सभी स्त्रियाँ सती साव्रित्री की प्रतिमूर्ति ही प्रतीत हो रही हैं, उनके पतिव्रत धर्म के धौत वस्त्र में कालिमा की एक रेख भी नहीं दृष्टिगोचर होती, तदनुसार पुरुष वर्ग भी एक पत्नीव्रत के नैपुण्य से परम तेजस्वी और ओजस्वी के रूप में प्रतिष्ठित हैं, कामवासना से नारियाँ पुत्रोत्पन्न नहीं करतीं अपितु प्राजापत्य धर्म की रक्षा के लिए शास्त्ररीत्या समय पर स्वक्षेत्र में बीज वपन कर चारों वर्णों के पुरुष पुत्र उत्पन्न कर पितरों का संतर्पण करते हैं। रामराज्य में प्रत्येक पुत्र अपने माता–पिता का धन स्वयं को समझता है, उसका उपयोग जैसे माता–पिता कर लें वह प्रसन्न रहता है। कठोर से कठोर आज्ञा का अनुवर्तन करने में उसे हिचक नहीं होती, अपने जननी–जनक को सर्वभावेन सुखी करना, वह अपना सहज कर्त्तव्य समझता है। पिता भी अपनी आत्मा के समान ही पुत्र का लालन–पालन उसके कल्याणार्थ

बिना आसक्ति के कर्त्तव्य समझ कर करता है। स्वामी–सेवक और गुरू–शिष्य भी स्व–स्वरूपानुसार संत–शास्त्रानुमोदित चर्या श्रद्धा–भक्ति के साथ किया करते हैं। उनका सर्व समर्पण और आज्ञानुवर्तन 'तत्सुख–सुखित्वम्' की भावना से ओत–प्रोत रहता है। स्वार्थ का उत्सर्ग करने से उनका तेज अग्नि और भास्कर की समानता करता है। सभी गृहमेधियों के गृह, अतिथि सेवा, अग्निहोत्रादि आह्निक क्रियाओं से देव मन्दिर के समान परम पवित्र, शान्ति प्रदायक और सुखावह सिद्ध हो रहे हैं। ऋषियों, मुनियों, सिद्धों और देवों के भी आकर्षक होने से उन्हें स्वर्ग–सदन कहा जाए तो अत्युक्ति नहीं होगी। गृह–गृह तुलसी–पुष्पवाटिका, स्वर्ण कलशों, मणि चौकों एवं वन्दनवार, पताकादि मंगल द्रव्यों से सुर–नर–मुनियों के आकर्षक सिद्ध हो रहे हैं, सभी सदनों में विप्र–धेनु–सुर–संत नित्य–नित्य संपूजित होकर परम प्रसन्न होकर अपने अनेक अमोघ आशीर्वादों से गृह स्वामी को लोक, परलोक के आनन्द का अनुभव कराते हैं। सभी गृहमेधी अपने–अपने गृह में रामनाम संकीर्तन, रामकथा और अनेक इतिहास–पुराणों को श्रवण कर

कालक्षेप किया करते हैं राज्य में। सभी वर्ण और आश्रम के नर–नारी, मुदिता, मैत्री और करुणा के भावों से भावित सर्वभूत हितरत बने रहते हैं। आनन्द! आनन्द!

रामराज्य में सभी नर–नारी परमपद स्वरूप हैं, अतः सभी अपुनरावर्ती धाम के अधिकारी हैं। कर्मयोग, अष्टांगयोग, ज्ञान योग, भक्ति योग, प्रपत्तियोग और आचार्यभिमान योग में अधिकार रखने वाले सभी स्त्री पुरुष योग स्वरूप, ज्ञानस्वरूप, प्रेमापराभक्ति स्वरूप एवं ब्रह्म स्वरूप हैं, सबकी चेष्टाएँ (कर्म) कर्त्तापन के अभिमान से रहित आसक्ति और फलाशा को त्यागकर संकल्प विहीन ही होती हैं, सब विधि निषेध के पार होते हुए भी लोक संग्रह के लिए वेद विहित आचरणों का परित्याग कभी नहीं करते।

रामराज्य में सभी वन पर्वत एवं पवित्र नदियों के किनारे, वानप्रस्थी–सन्यासी अर्थात् कुटीचक आदि छः प्रकार के परिव्राजकों एवं ऋषियों–मुनियों के उटजों से परिपूर्ण हैं, उक्त महामुनियों की दिनचर्या स्वरूपानुसार होने से सभी सुर, नर, नाग के समाजों से वे वन्दनीय हैं। रामराज्य में राज्य की ओर से सजगता के साथ उन्हें किसी प्रकार का नाम मात्र कष्ट न हो, प्रबन्ध रहता है।

पुरुषोत्तम भगवान राजा राम अपनी सम्पूर्ण प्रजा पर पुत्रवत्, आत्मवत् अनुरक्ति रखते हैं। प्रजा रंजन के लिए वे अपने प्रिय भ्राताओं एवं सीता जैसी अपनी प्राणवल्लभा, सम्पत्ति, राज्य और अपनी आत्मा का भी त्याग करने में किञ्चित कष्ट का अनुभव किये बिना समुद्यत रहते हैं। अतः महाराज राम पर सप्तद्वीपों की प्रजा अपने पुत्र, स्त्री, प्राण, कीर्ति, सम्पत्ति, स्वर्ग और अपवर्ग का भी त्याग कर परम प्रीति रखती है। महाराज राम के दर्शन एवं उनके आज्ञानुवर्तन के अतिरिक्त अन्य कोई लाभ न समझकर उन्हीं में रीझे रहना प्रजा का सहज स्वभाव हो गया है, प्रजा राम प्रेमवश अपनी सन्तानों को रामनाम जपने, रामकथा श्रवण करने, श्रीराम की अनुकरण लीला करने, श्रीराम दर्शन करने और अयोध्या जो कि राम की राजधानी है वहाँ आने–जाने का पाठ पढ़ाया करती है। गृह–गृह में सभी परमार्थ पथिक साधु–सन्तों और रामभक्तों की अत्यन्त आदरपूर्वक सद्भावना के साथ सेवा होती है। गृह–गृह में इतिहासों और पुराणों की कथा नित्य–नित्य हुआ करती है, श्री रामनाम संकीर्तन से सारा रामराज्य राममय हो गया है, जिससे गृह मेधियों को परम पुरुषार्थ

की प्राप्ति में सहज सहायता सम्प्राप्त होती रहती है। स्थान–स्थान पर गुरुकुल संचालित हैं, जहाँ हजारों–हजारों ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करते हुए ब्रह्मविद्या प्राप्त किया करते हैं, अस्तु, सभी प्रजा भवरस से विरक्त और आत्मा परमात्मा में अनुरक्त रहने की स्वभाव वाली है। अतएव आनन्द ! आनन्द ! आनन्द!

हे प्रभो ! श्री रामराज्य में त्रिकरण अधर्म का नाश हो गया है, किसी मनुष्य में किसी के प्रति स्वप्न में भी मानसिक पाप में प्रवृत्ति नहीं सुनी गयी तो वाचिक और कायिक पापों की सम्भावना ही नहीं हो सकती। जब स्वप्न में अधर्म का स्पर्श नहीं होता, तब जाग्रत में कैसे हो सकता है। पशुओं और पक्षियों में भी अधर्म का दर्शन उसी प्रकार नहीं होता जैसे दिन में रात्रि का। (अकृतकरण शास्त्रनिषिद्ध कार्य) भगवत् अपचार, भागवतापचाार और असह्यापचारों का नाम धर्मग्रन्थों को पढ़–सुनकर लोग जान पाते हैं अन्यथा पापों का नाम भी नहीं जानते, शास्त्र अविहित कर्मों का सर्वथा लोप हो गया है रामराज्य में। आसुरी सम्पत्ति से सप्तद्वीपवती पृथ्वी विहीन है, अस्तु, रामराज्य के चराचर जीव दैवी सम्पत्ति सें सम्पन्न हैं। अस्तु, आनन्द ! आनन्द ! आनन्द !

हे जगत् सृष्टा ! श्रीराम जी के धर्ममय राज्य में काल की कलना भी पंगु ही रहती है। प्रभो ! अकाल में किसी की मृत्यु नहीं होती, पिता को पुत्र का श्राद्ध करने का अवसर कभी स्वप्न में भी नहीं आता, स्त्रियाँ सदा सधवा रहती हैं, हाँ रणभूमि में क्षात्रधर्मनिष्णात पति के वीरगति प्राप्त करने के पश्चात् उसकी स्त्री पतिभक्ति को पुरःसर करके पति के साथ सती हो जाती है जिससे वह तत्काल पतिलोक को प्राप्त कर लेती है। सभी ऋतुओं में सभी ऋतु के फूल–फल श्रीराम जी की सेवा समझकर प्रदान करने के लिए सभी वृक्ष असमय में भी फूलते फलते रहते हैं। सभी भूरूह वृन्द रस–स्राव कर जनता जर्नादन की सेवा करने के लिए सर्वसमय समुत्सुक बने रहते हैं। श्रीराम राज्य में हिंसक जन्तुओं से किसी को पीड़ा नहीं प्राप्त होती, पशु–पक्षी भी सहज परस्पर द्वेष को त्याग कर काल, स्वभाव, कर्म और गुण–दोषों के शीश पर पैर रखकर सुखमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। महाराज ! सच पूछें तो रामराज्य में युगातीत की स्थिति पद–पद में दर्शन करने के लिए संप्राप्त होती है। अस्तु, आनन्द ! आनन्द ! आनन्द !

हे जगत्पिता ! रामराज्य की कथा सर्वभावेन

अलौकिक है। अहो ! पञ्चभूत (पृथ्वी, अप, तेज, वायु, और आकाश) परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के राज्य में प्रजावर्ग का कैंकर्य करते हैं, उसके प्रतिकूल आचरण नहीं करते, सदा सानुकूल रहकर अपनी चेष्टाओं से जन–जन को सुखी किये रहते हैं क्योंकि जन–मन–रंजन राजाराम की रजाय सबको शिरोधार्य है।

प्रभो ! आकाश निर्मल, नेत्र सुखद रहता है, वायु सदा शीतल, मंद और सुगन्ध को लिये हुए बहकर रामराज्य के जन समुदाय को सुखी बनाये रहता है। वायु के झकोरों तथा प्रखरता जनित आपत्ति का नाम नहीं है, वायु जनित व्याधि रामराज्य में किसी को नहीं होती। सभी प्राणियों के पञ्च प्राण और कफ, वात, पित्त सम रहकर सबको स्वस्थ बनाये रहते हैं। इसी प्रकार अग्निदेव से किसी को भय नहीं होता अर्थात् अग्नि किसी की असावधानी से भी उसे व उसके गृह आदि को नहीं जलाता। गृहमेधियों के गृह की अग्नि कभी नहीं बुझती, नित्य हवि से हवन होने के कारण। हव्य वाहन प्रज्वलित रहते हैं। रामराज्य में दावानल के द्वारा वन पर्वतादि की सम्पत्ति की हानि नहीं होती, अतएव प्रजा में सदा आनन्द ! सदा आनन्द बना रहता है।

जल की कमी रामराज्य में किसी समय किसी स्थान में नहीं रहती, मरुदेश में भी प्रजा जल के कष्ट का अनुभव नहीं करती, मेघ प्रजा की रुचि के अनुसार जलवृष्टि करते रहते हैं, पत्थर वर्षाकर किसी को कष्ट नहीं देते। वापी, कूप, तड़ाग, और सरसी, सरिता सभी सुन्दर सुधासम स्वादकर जल से भरे रहते हैं। सभी नर–नारियों एवं पशुओं को जलाशयों में सरलता से जलग्रहण करने के लिए सुन्दर–सुन्दर घाटों की व्यवस्था है। जल में डूबने या नदियों से बाढ़ जनित भय का सर्वदा अभाव रहता है रामराज्य में। जल में विकार नहीं उत्पन्न होता जिससे प्राणियों के प्राण और अन्न पुष्ट रहते हैं। जल में रहने वाले जन्तुओं से भी किसी को भय प्राप्त होना नहीं सुना गया है, तथा जलयान भी जल में सदा सुरक्षित रहते हैं। धन्य है रामराज्य, जिसकी स्पर्धा सुरश्रेष्ठ इन्द्रदेव भी किया करते हैं। स्वयं वरुणदेव यदा कदा पुरुषोत्तम भगवान का दर्शन अयोध्या में करके अपने को कृतार्थ समझते हैं, अस्तु, रामराज्य में मात्र आनन्द ! आनन्द ! आनन्द!

प्रभो ! परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान राम के राज्य में पृथ्वी स्वयं आनन्द की स्थिति को प्राप्त कर रामराज्य

में सर्वभावेन श्रीराम की सेवा करने में अपना सच्चा उपयोग एवं स्वरूप समझती हैं। महाराज पृथु के विशेष प्रयत्न से जो जो वस्तुएँ गोरूप पृथ्वी ने प्रकट की थीं; वे सभी और उनसे अधिक वस्तुएँ अपने आप प्रकट कर श्रीरामराज्य की सेवा करने में अपना परम सौभाग्य समझती हैं।

रामराज्य में सब प्रकार के अन्नों की उपज अधिक से अधिक मात्रा में होती है। सर्व समय ससि सम्पन्न धरित्री की शोभा अवर्णनीय बनी रहती है, जिससे नेत्रवन्तों को अत्यानन्द की अनुभूति होती है। सब प्रकार की औषधियाँ रामराज्य में उत्पन्न होकर प्राणियों की सेवा करती हैं एवं सब प्रकार के फल–फूल सब समय संप्राप्त होने की सेवा भूमि सावधानी से किया करती है। हीरा आदि रत्न तथा स्वर्ण, रजत, ताँबा, पीतल, लोहा, पत्थर, कोयला, गैरिक इत्यादि सब प्रकार के खनिज पदार्थों की खानें उत्पन्न कर वसुन्धरा रामराज्य की सेवा उदारमना होकर किया करती है। समुद्र भी अपनी लहरों द्वारा तट पर विविध रत्नों को डाल–डाल कर प्रत्येक मनुष्य की सेवा करने के लिए समुद्यत रहता है। अतएव सप्तद्वीपवती पृथ्वी में सभी लोग कुबेर के मन में स्पर्धा

उत्पन्न करने की योग्यता रखते है।

इस प्रकार सभी पञ्चभूत रामराज्य की सेवा क्रीत सेवक की भांति करने में सौभाग्य समझकर स्वयं आनन्दित बने रहते हैं। श्री रामराज्य में गोधन का बाहुल्य होने से घी, दूध की बहुतायत रहती है जिससे यज्ञादि कार्य सुचारु रूप से चलते हैं। घी, दूध से पली पोषी प्रजा हृष्ट–पुष्ट रहा करती है। अस्तु आनन्द ! आनन्द ! आनन्द !

ब्रह्मन्। इस प्रकार देहयात्रा और आत्मयात्रा के निर्वाह के लिए उभय विभूतियाँ रामराज्य की प्रत्येक प्रजा को सदा वरण किये रहती हैं।

प्रभो ! रामराज्य के समस्त नर–नारियों का अन्तः करण इतना सुन्दर है कि जितना पूर्ण स्थिति प्राप्त महान सन्त का, और शरीर इतना सुन्दर है कि जिसे देखकर सुर एवं सुर–रमणियों का सौन्दर्य विलज्जित होकर ऊपर सिर नहीं उठा सकता। सभी का शरीर व मन अनामय है, सभी हृष्ट–पुष्ट एवं शक्ति सम्पन्न हैं, परस्पर सभी एक दूसरे के हित चिन्तक और प्रेमी हैं, सभी श्री रामजी के नाम–रूप–लीला और धाम का

परस्पर अनुकथन कर करके राम प्रेम के अगाध सिन्धु में निमग्न रहा करते हैं। अतएव आनन्द ! आनन्द ! आनन्द !

हाटों में वस्तुएँ बिना दाम के ही मिला करती हैं। अधर्म न होने से न्यायालय नाम मात्र के हैं। जो खाली ही पड़े रहते हैं। चक्रवर्ती सम्राट श्री राम जी महाराज अपनी प्रजा की वार्ता वात्सल्यपूर्ण हृदय से पुत्रवत् स्वयं सुनने को सदा समुत्सुक रहते हैं। दण्ड तो मात्र यतियों के हाथ में ही रहता है रामराज्य में, भेद भी नर्तक समाज में ही दृष्टिगोचर होता है, साम का प्रयोग अकारण परस्पर मनुष्य ही नहीं करते, पशु–पक्षी और कीट–पतंग भी एक दूसरे से सहज ही किया करते हैं। रामराज्य की सभी प्रजा सुर–पुर के वैभव को अपने वैभव से विलज्जित करने वाली है, अस्तु, किसी को किसी से धन लेकर ग्रहीता बनने की कामना ही नहीं होती, हाँ विवाह आदि संस्कारों एवं यज्ञादि अनुष्ठानों में दान देना और लेना देखा जाता है। नगर के बाहर बिना मालिक के पड़े हुए धन को भी कोई नहीं उठाता, अस्तु, आनन्द! आनन्द ! आनन्द !

हे जगद्गुरो ! प्रतीति होती है कि सभी ईश्वरीय

शक्तियाँ रामराज्य में श्रीराम जी की इच्छानुसार जगत–कार्य संपादन में सर्व समय सजगतया लगी रहती हैं। साकेत पीठाधीश्वर श्री राम जी का विमल यश त्रिलोक में ऋषियों, मुनियों और सिद्धों द्वारा गाया जा रहा है जो महा महापातकों का विनाशक और श्रेय गुणों का संस्थापक एवं भवसागर का शोषक तथा परम पद प्राप्ति का पोषक सिद्ध हो रहा है। नाकपालों, वसुपालों तथा बड़े–बड़े महीपालों के किरीट पुरुषोत्तम भगवान राम के पाद–पद्मों में संलग्न रहते हैं। नित्य ही बड़े–बड़े ऋषि, मुनि, सिद्ध और देव उनके दर्शन कर करके अपने को कृतार्थ समझते हैं। प्रभो ! रामराज्य की प्रजा की आचार–विचारपूर्ण दिनचर्या परम पद स्थित नित्य–मुक्तों जैसी है, वह सुर–पुर ब्रह्मपुर और मोक्ष सुख को नगण्य समझकर रामप्रेम परायण बनी रहकर अपने प्रभु श्रीराम के कैंकर्य प्राप्ति को ही परम पुरुषार्थ समझती है। यज्ञानुष्ठान एवं देवाराधन आदि आह्निक कर्मों का फल श्रीराम जी के मंगलानुशासन के लिए ही प्रजा किया करती है, स्वार्थ में उसकी कोई चेष्टा नहीं होती, महाराज श्री रामचन्द्र के सुविकसित मुखारविन्द का दिव्य दर्शन ही परम भोग्य समझने वाली प्रजा उस परमानन्द के सिन्धु में सदा मग्न रहती है,

जिस सुख के लिए भगवान शिव अशिव वेष बनाकर रात्रि दिवस राम नाम का जाप करते हुए प्रयत्नशील रहते हैं। प्रभो ! अधिक क्या कहूँ, सुरलोक एवं ब्रह्मलोक के निवासी भी अवध राज की सुख सम्पत्ति को देख अपने को मन्दभागी कह–कहकर स्पर्धा किया करते हैं। शेष शारदा कई कल्पों तक वर्णन करते रहें तो भी रामराज्य की आनन्दमयी विभूति के सिन्धु का पार नहीं पा सकते। देवों, ऋषियों, मुनियों, सिद्धों और पितरों समेत रामराज्य की प्रजा अपनी चर्या से सभी भूत समुदाय को प्रसन्न किये रहती है, सबका अमोघ आशीर्वाद उसे नित्य–नित्य मिला करता है, अस्तु, रामराज्य में आनन्द ! आनन्द !"

इति द्वितीय दृश्य का प्रथम प्रकाशः

अथ तृतीय दृश्य

"वत्स नारद ! सप्तपुरियों में सर्वश्रेष्ठ पुरी श्री अयोध्या का वर्णन तुम्हारे मुख से श्रवण करने की प्रबल कामना की धवल धारा कौशल किशोर की कौशलपुरी की कमनीयता के यश–सिन्धु में अवगाहन करके ही प्रशान्त होगी अन्यथा प्रवहिता का प्रवहन कार्य समाप्त न होने से चंचलता की पुनः पुनः आवृत्ति उसके मन को मनहूस बनाये रहेगी।"

"प्रभो ! आप श्री स्वयं अयोध्या की वीथियों में विहार करने की कामना से जब तब श्री अयोध्या गमन करते ही हैं, अतएव पिता नारायण को श्रीरामपुरी की श्री शोभा ध्यान की आँखों से कभी ओझल नहीं होती, किन्तु आज्ञा उल्लंघन न करूँगा, श्रवण करें मेरे पिता श्री !

अष्टचक्रा नवद्वारा श्रीरामपुरी की श्री शोभा अवांगोचरी ही नहीं मनसागोचर भी है। चान्द्रमस लोक एवं धराधाम की समस्त पुरियाँ सर्वांगीण वस्त्राभूषणों से स्वयं को सजाकर अयोध्या अपराजिता नामक श्री रामपुरी का दर्शन करने बहुल उत्कण्ठा को लेकर पधारीं किन्तु राजाराम की राजधानी की ओर दृष्टिपात करते

ही सलज्ज निम्न नयना पुर–पतियों को कोसती हुई स्वपुरी लौट आईं, तत्पश्चात उनके पतियों ने स्वपत्नियों को धैर्य बँधाकर सौन्दर्यशालिनी बनाना चाहा, किन्तु प्रयास निष्फल रहा, लगता है कि अयोध्यापुरी में अलौकिकता और अप्राकृतता का ही वैभव विलास है। आपश्री की कृति वहाँ अन्वेषण करने पर भी आपके पुत्र नारद को अकिञ्चित ही प्राप्त हुई, अस्तु आश्चर्यमय चमत्कारपूर्णा रामपुरी किसी के कृति का विषय नहीं बन सकती।"

"वत्स ! यही तो तुम्हारे मुख से श्रवण करना चाहता था कि तुम्हें भी उस अगोचर असमोर्ध्व पुरी का दिव्य दर्शन हो गया है या नहीं, क्योंकि प्राकृतिक गुणों की साड़ी से अपने को आच्छादित किये हुए उस पुरी का दर्शन किसी विशेष अधिकारी को ही हो पाता है, यद्यपि उसके साटिका का भी चमत्कृत वैभव प्राकृत प्रदेश की पुरियों से सर्वविधि वैशिष्ट्य और वैलक्षण्य को लिये हुए हैं तथापि कुयोगी को उसके वाह्यावरण का दर्शन भी दुर्लभ ही रहता है। अवधपुरी का ज्ञान, दर्शन तथा उसमें प्रवेश बिना रामकृपा के सर्वदा सबको अप्राप्य ही रहता है। अस्तु तुम महाभाग्यशाली हो।

हाँ, अब अयोध्यापुरी की महिम्नता का और–और वर्णन करके मेरे अतृप्त कर्णरन्ध्रों की प्यास को बुझाने का उपाय बनो, वत्स।"

"पिताजी ! पुरी का दूर से दर्शन करते ही पापपुञ्जों की समस्त सेना बहुत दूर पलायन कर जाती है, दुबारा उसकी ओर अपना मुख भी नहीं फेरती, अयोध्या का नाम सुनते ही वह सेना निष्प्राण हो जाती है। यही कारण है कि पुरी का नाम अयोध्या है। धन्य है पुरी के अचिन्त्य शक्ति को। सच्चिदानन्दात्मक रामपुरी में प्रवेश करते ही दर्शक सच्चिदानन्दमय उसी प्रकार बन जाता है, जैसे अग्नि में पड़ने से ईंधन अग्निमय बन जाता है।

प्रभो ! पुरी के पश्चिम, उत्तर और पूर्व की ओर बहने वाली श्री सरयूजी की उत्ताल तरंगों से युक्त धवल धारा कल–कल नाद करती हुई श्री रामपुर की श्री शोभा को समुन्नतशील बना रही है, विरजादि सरिताओं की कारणभूता मानस नन्दिनी में स्नान, जलपान एवं उनके दर्शन किये बिना कोई श्री राम जी की प्राप्ति नहीं कर सकता, चाहे वह आप ही के समान क्यों न हो, श्रीवाशिष्ठी जी अपने में स्नान करने वाले को बिना प्रयास रामधाम की प्राप्ति करा देती हैं। धन्य है उनकी

महिमा को, सुर–नर–नाग एवं ऋषि–मुनि वन्दित पाद–पद्मा श्री सरयू जी सर्वकाम–प्रदा हैं, अस्तु त्रिभुवनवासी उनके सेवन से स्वयं को सिद्ध मनोरथ पाते हैं। किसी किसी भावुक भक्त को सरोजा जी का दिव्य दर्शन अधिदेवी के रूप में भी होता है, अहह ! स्वर्णमय कमलों के मध्य स्वर्ण–सिंहासन में प्रतिष्ठित एवं गंगादि सर्व सरिताओं तथा नाग–कन्याओं से सर्वभावेन सेवित सरयू जी का दर्शन करने वाले प्रेमी भक्त धन्यातिधन्य होकर श्रीराम जी की सन्निधि में सतत निवास करते हैं। जिन सरयू की परम पावन धवल धारा में नित्य परब्रह्म परमात्मा स्नान करने एवं जल विहार करने में आनन्द की अनुभूति करता हो, उनकी महिमा की इयत्ता शारद–शेष–गणेश और महेश न पा सकें, तो कौन आश्चर्य है ? अहो ! श्रीविष्णु–विलोचन–सम्भवा श्री सरयू के युगल किनारे प्रकृति–प्रभा के सौन्दर्य–सार के साक्षात् स्वरूप हैं। सुन्दर, समतल, दूर्वादलादि श्याम वनराजि से संशोभित तटवर्ती सर्वश्यामला भव्य भूमि तीव्र गतिगामिनी तरंगिनी के युगल स्कन्धों से पड़े हुए हरिताभ परिलक्षित पिछौरे की सुसज्जित छोर है, नारिकेल, ताड़, खजूर, नीम, आम्र, कटहल, केला, लवंग, इलायची और सुपारी आदि विविध वृक्षों की

बहुतायत वैविध्य को संजोये हुए लताओं से आलिंगित ऐसी शोभा समुद्भूत कर रही थीं जैसे सपत्नीक सुरवृन्दों की विविध पंक्तियाँ ! श्री मानस नन्दिनी जी की पूजा–प्रतिष्ठा के लिए अपने सिर व करों में फल–फूल लेकर प्रार्थना कर रही हैं, अहह ! अपना सिर हिला–हिला कर श्री सरयू जी को प्रणाम करना इनका नैसर्गिक कृत्य प्रतीत हो रहा है। सरयू की धवलीकृत धारा में इन वृक्ष समूहों की छाया पड़ने से ऐसा लगने लगता है कि जलराशि के भीतर बसे हुए अन्य लोक में निशादेवी का आगवन हो गया है। श्री सरयू पुलिन पर तुलसी एवं पुष्प उद्यानों के मध्य विरचित देवों के विशाल भव्य भवनों की शोभा अनिर्वचनीय प्रतीत होती है, सहंज ही लगने लगता है कि शक्ति, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश, इन्द्र, वरुण, कुबेर, यम, अग्नि, वायु, सूर्य और चन्द्र आदि देव अपने–अपने लोक–भवनों के सहित, अयोध्यावासियों के सुख से स्पर्धान्वित होकर तत्सुख का अनुभव करने के लिए श्री सरोजादेवी के सम्मुख उपस्थित होकर उनके कृपा की भिक्षा की याचना कर रहे हैं, साथ में अपनी–अपनी शक्तियों को इसलिए लिये हैं कि "स्वबर्गेजायते परमाप्रीतिः" के अनुसार इनको देखकर श्री राम सरि की कृपा हम लोगों

को शीघ्र संप्राप्त हो जायेगी।

अहो ! वाशिष्ठी जी के दोनों किनारे मणिमय मनोरम विस्तृत घाटों की बहुतायत से बड़े शोभनीय लग रहे है, लगता है सुरलोक से वरुण लोक जाने के लिए प्रशस्त और सुखमय सोपान मार्ग बनाया गया है। सूर्य एवं सोम का प्रतिबिम्ब मणियों से जटित स्वर्ण सदनों पर पड़ने से उनकी चमक दमक चकाचौंध करती हुई श्रीसरयू जी में पड़ने से जलराशि के भीतर बने हुए भवनों का भ्रम उत्पन्न कर देती है। सरिता में अरुण, नीले, पीले और सफेद रंग के फूले कमलों पर मड़राते और गुन–गुन से तटवर्ती प्रान्त को गुञ्जरित करती हुई भ्रमर पंक्तियाँ नेत्रवन्तों और श्रवणवन्तों को अतिशयानन्द के झूले में झुलाने से उपरत नहीं होतीं, मोर–मोरनियों का नृत्य एवं उनकी मधुर–मधुर बोली, कोयल की कुहू–कुहू की मीठी ध्वनि, पपीहे की पिया–पिया की विरह उत्पन्न करने वाली अतिध्वनि एवं अन्य सभी प्रकार के पक्षियों का कलरव सभी के मन को मुग्ध करने में सहज समर्थ होता है। शीतल, मन्द, सुगन्ध समीर सदा बहता रहता है, तभी तो सभी देवी–देव सरयू तट संस्थित प्रमोदवन में विहार करके

कभी संतृप्त नहीं होते, क्या नन्दनवन ? क्या चैत्रवन? क्या अंबिकावन ? सभी प्रमोदवन के सामने सिर नत होकर लज्जा के सिन्धु में गोता लगाने लगते हैं। धन्य है ! राम को रमाने वाली सरयू तट संस्थिता साकेत नगरी को। जिस समय राजाराम सपरिकर सरयू पुलिन पर विहार करते हैं उस समय श्री सरयू और तत्तट संस्थित प्रमोदविपिन की शोभा अनन्तगुणा वृद्धिभाव को प्राप्त हो जाती है, विमानों में चढ़कर सुर ललनाओं समेत सुर–समूह जय–जयकार की ध्वनि करते हुए इत्र, रंग, पुष्प और पुष्पमालाओं की वर्षा करने में अपना सौभाग्य समझते हैं, दुन्दुभिनाद के साथ स्तुति करते हैं तथा दर्शनाह्लाद से परिपूरित होकर नेत्रों को सफल बनाते हैं। स्पृहणीय, वाञ्छनीय एवं दर्शनीय दृश्य उस समय का, शिव के शिवत्व, विधि के विधित्व और हरि के हरित्व की भी महिमा–गरिमा भुलाकर साधारण जीवों की भाँति उन्हें दर्शनानन्द के सिन्धु में अस्त कर देता है, अहो! धन्यातिधन्य हैं अयोध्या नगर निवासी, जिन्हें उक्त दुर्लभ सुख का सिन्धु सतत अपने में आत्मसात किये रहता है।

ब्रह्मदेव ! साकेत नगर के नागरिकों के भव्य–भवन देव विमानों की श्रीशोभा को तिरस्कृत करते हुए गगन

का चुम्बन करते से प्रतीत होते हैं, लगता है कि इनकी निर्माण कला विधि प्रपञ्च से अतीव और अलौकिक है। राजमार्गों एवं अन्यान्य वीथियों की शोभा, सुरपुर एवं ब्रह्मपुर के मार्गों की शोभा श्री को विलज्जित करने वाली है, सुरभित सुमनों एवं इत्रों से सींची हुई वीथियाँ अपने वैभव से सुरललनाओं की इत्रसिंचित रंग–बिरंगी चमत्कृत शाटिकाओं की श्रीशोभा को अपहरण कर देव–देवियों के मन में क्षोभ उत्पन्न कर देती हैं। रत्न जटित सभी सदनों के द्वार कलश–दीपों एवं मणि–चौकों, कदली स्तम्भों तथा सुगन्धित पुष्पों व पुष्प वेलियों से मण्डित हैं, जिससे मार्गों और भवनों की भव्यता में, और–और निखार आने से सुरपुरवासियों के स्पर्धा का विषय बन रहे हैं वे। प्रमोदवन आदि बारह वनों की वन–राजिश्री ऐसी कमनीय, रमणीय और दर्शनीय है कि नन्दन–वन में विहार करने वाली सुर–ललनाओं का मन वहाँ से उपरत होकर रामपुरी के वनों में विहार करने के लिए उनको बाध्य कर देता है। अवधपुरी के नर–नारी सभी देव–देवियों से अधिकाधिक सुन्दर, सुकुमार, मधुर, सुभग, सुडौल और मनमोहक हैं, जिन्हें देखकर शची, शारदा एवं देवकुमारों के मन में स्पर्धा के भाव उत्पन्न हो जाते हैं।

अयोध्यावासियों की जीवन पद्धति को क्या कहना है? लगता है कि उनकी चर्या से ही वेद का यथार्थ रहस्य हृदयंगम किया जा सकता है।

प्रभो ! अयोध्यापुरी सब प्रकार से सराहनीय और अनुभव करने योग्य है; क्योंकि वेद वेद्य परब्रह्म परमात्मा पुरुषोत्तम भगवान वहाँ के अधिपति उसी प्रकार हैं जैसे देह नगरी का अधिपति जीव है। सारे श्रुति छन्द ही नगर निवासी नर नारी हैं, धन्य है अयोध्या की अलौकिक विभूति को ! जिसके बार–बार दर्शन व यश श्रवण करने के लिए जगत सृष्टा आप भी लालायित बने रहते हैं।

संक्षेपतः आप श्री का रामराज्य के वैभव का प्रकाश रूप दीप–दान द्वारा पूजन नारद के द्वारा हो गया है।

विशेषरूप से उपर्युक्त विवेचन पर तो आपका सहज अधिकार है, आप श्री से कुछ अविदित नहीं है क्योंकि आप सबके पूर्वज हैं। राम–रहस्य के यथार्थतः ज्ञाता आप ही हैं, आपके कृपा प्रसाद से ही श्रीराम के नाम, रूप, लीला और धाम का कुछ ज्ञान नारद में है।''

ब्रह्म देव ने कहा –

''वत्स ! श्रीरामराज्य की महामहिमा तुम्हारे मुख से

सुनकर अतिशयानन्द की अनुभूति हुई, जो अनिर्वचनीय है। अब तुम अपने ब्रह्मस्वर विभूषित वीणा की तन्त्रियों को झंकरित करते हुए श्रीराम नाम का संकीर्तन सुनाकर मेरे प्यासे अतृप्त कर्णों में नामामृत उड़ेल दो।"

'जो आज्ञा' कहकर श्रीवीणा पाणि देवर्षि नारद ने श्रीराम नाम कीर्तन सुनाकर ब्रह्मसभा समेत ब्रह्मा जी को आनन्द सिन्धु में निमग्न कर दिया।

आनन्द ! आनन्द ! आनन्द के वातावरण में कौन है ? कहाँ है ? क्या कर रहे हैं ? सब भूल गये ।

इति तृतीय दृश्य का प्रथम प्रकाशः

अनन्त श्री विभूषित श्री स्वामी रामहर्षणदास जी महाराज का अमूल्य भक्ति साहित्य :

१. वेदान्त दर्शन (ब्रह्मसूत्र व्याख्या) सजिल्द एवं अजिल्द
२. श्री प्रेम रामायण (तृतीय संस्करण) सजिल्द
३. औपनिषद् ब्रह्मबोध
४. गीता ज्ञान
५. रस चन्द्रिका
६. प्रपत्ति–प्रभा स्तोत्र
७. विशुद्ध ब्रह्मबोध
८. ध्यान वल्लरी
९. सिद्धि स्वरूप वैभव (द्वितीय संस्करण)
१०. सिद्धि सदन की अष्टयामीय सेवा
११. लीला सुधा सिन्धु (द्वितीय संस्करण)
१२. चिदाकाश की चिन्मयी लीला
१३. वैष्णवीय विज्ञान
१४. विरह वल्लरी
१५. प्रेम वल्लरी
१६. विनय वल्लरी
१७. पंच शतक
१८. वैदेही दर्शन
१९. मिथिला माधुरी
२०. हर्षण सतसई
२१. उपदेशामृत
२२. आत्म विश्लेषण
२३. रामराज्य
२४. सीताराम विवाहाष्टक
२५. लीला विलास
२६. प्रपत्ति दर्शन
२७. रहस्यत्रय भाष्यम्

प्रकाशन विभाग
श्री रामहर्षण कुंज, नयाघाट, परिक्रमा मार्ग, अयोध्या, जिला साकेत (उ.प्र.) २२४१२३